# समाज के प्रकार
## (Types of Society)

सामाजिक विशेषताओं के आधार पर समाज को मुख्यतः चार भागों में विभक्त किया जा सकता है जो इस प्रकार हैं—

(1) जनजातीय समाज (Tribal Society)
(2) कृषक समाज (Agarian Society)
(3) औद्योगिक समाज (Industrial Society)
(4) औद्योगिकोत्तर समाज (Post-Industrial Society)

### (1) जनजातीय समाज (Tribal Society)

जनजातीय समाज के विविध पक्षों के बारे में कुछ जानने से पहले यह अति आवश्यक है कि 'जनजाति' की अवधारणा का सम्यक् विश्लेषण कर लिया जाये। इस आवश्यकता के दो प्रमुख कारण हैं—प्रथम, *"सामान्य व्यक्ति, जनजाति के सन्दर्भ में कई अपूर्ण एवं भ्रामक धारणाओं का प्रयोग करते हैं। यह एक ऐसा जन समुदाय है जो जीवन की मुख्यधारा से कटा हुआ है", "यह पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करने वाले लोग हैं, इनका सामान्य जनजीवन आदिम प्रकृति का है।"* इत्यादि। दूसरा—अवधारणात्मक अज्ञानता की दशा में जनजाति को जाति एवं प्रजाति के पर्यायवाची के रूप में भी प्रयुक्त कर लिया जाता है। यद्यपि कई मानवशास्त्रियों एवं समाजशास्त्रियों ने भी स्वीकार किया है कि जनजाति की कोई ऐसी परिभाषा देना जो यथेष्ट एवं सर्वमान्य हो, अत्यन्त दुष्कर कार्य है तथापि समाजशास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते हम ऐसा प्रयास करने से मुँह नहीं मोड़ सकते हैं।

**डॉ० रिवर्स ने** इसे परिभाषित करते हुए कहा है— *"जनजाति एक सरल समुदाय है जो कि एक निश्चित भू-भाग पर निवास करती है, एक ही भाषा बोलती है और समान कार्यों; जैसे—युद्ध आदि में संगठित होने की क्षमता रखती है।"*

**हॉवेल** के शब्दों में— *"जनजाति एक सामाजिक समुदाय है, जो एक विशिष्ट भाषा बोलती है, जिसकी एक विशिष्ट संस्कृति होती है। इनका राजनीति के आधार पर संगठित होना आवश्यक नहीं होता है।"*

### (1) कृषक समाज (Agarian Society)

कृषक समाज वस्तुतः ग्रामीण समाज का ही दूसरा नाम है। भारतीय सन्दर्भ में देखा जाए तो भारतीय गाँव कृषि-अर्थव्यवस्था पर आधारित होने के कारण कृषक समाज के रूप में विकसित हुए हैं। कृषक समाजों का उदय जनजातीय समाजों के शिकार और घुमन्तू जीवन के स्वरूप में परिवर्तन आने के कारण हुआ। जब लोगों ने अस्थायी अथवा घुमन्तू जीवन का त्याग कर कृषि और बागवानी को आजीविका का साधन बनाना प्रारम्भ किया तो धीरे-धीरे कृषि पर आधारित स्थायी गाँवों का विकास होने लगा। वैसे यह परिवर्तन सभी ग्रामीण समाजों में पूरी तरह नहीं हो पाया है। विश्व के कई ग्रामीण समुदायों की अर्थव्यवस्था का मूल आधार आखेट, पशुपालन एवं बागवानी है, कृषि नहीं। भारतीय समाज अर्थव्यवस्था

Scanned with CamScanner

अभी भी विकास के उस स्तर तक नहीं पहुँच पायी है जहाँ वह कृषि पर निर्भरता से मुक्त हो जाए। इसीलिए भारतीय ग्रामीण समाजों का मूलाधार अभी भी कृषि ही बनी हुई है।

### (3) औद्योगिक समाज (Industrial Society)

**औद्योगिक समाज का प्रारम्भ**—औद्योगिक क्रान्ति जिसमें 16वीं शताब्दी में यूरोप के अन्धकार युग को समाप्त किया, के परिणामस्वरूप माना जा सकता है कि औद्योगिक क्रान्ति ने 18वीं शताब्दी के अन्त के आते-आते सम्पूर्ण यूरोप को गतिमान कर दिया। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यूरोप में आर्थिक गतिविधियाँ, मुद्रा के प्रवाह एवं लोगों की गतिशीलता ने जोर पकड़ा। नये औद्योगिक युग का प्रमुख लक्षण कारखाना उत्पादन पद्धति का उदय था जिसने गृह उद्योगों को ध्वस्त कर दिया। जैसे-जैसे औद्योगिकीकरण की रफ्तार बढ़ी वैसे-वैसे नये-नये औद्योगिक केन्द्र विकसित होते गये। ये औद्योगिक केन्द्र सामाजिक, आर्थिक एवं पारिस्थितिकी के दृष्टिकोण से नगरीय स्वरूप के थे। इन नवविकसित नगरों की विशेषताएँ परम्परागत समाजों से भिन्न थीं।

सबसे पहली बात, तो यह थी कि इन औद्योगिक समाजों का आर्थिक आधार कृषि न होकर गैर-कृषि कार्य यानि उत्पादन, वाणिज्य-व्यापार एवं विविध प्रकार की सेवाएँ थीं। कारखाना उत्पादन पद्धति के कारण भारी संख्या में श्रमिकों का आगमन इन नवविकसित नगरीय केन्द्रों की ओर होने लगा। इन अप्रवासी मजदूरों के कारण नगरों में गन्दी-बस्तियों का उदय होने लगा, साथ ही एक विषमतापूर्ण समाज का भी उदय होना प्रारम्भ हुआ। इस विषमतापूर्ण समाज में विभिन्न क्षेत्रों, जातियों, धर्मों, भाषाओं, सांस्कृतिक परम्पराओं का समन्वय देखा जाने लगा, लेकिन इस विषमतापूर्ण समाज के उदय के साथ-साथ कुछ अन्य विशिष्ट विशेषताएँ भी उभरीं जिन्होंने औद्योगिक समाज को एक अलग स्वरूप प्रदान किया। **लुई विर्थ** ने इन्हीं विशेष लक्षणों को नगरवाद (Urbanism) का नाम दिया। उन्होंने अपने लेख *'Urbanism is a way of life'* प्रमुख लक्षणों की चर्चा की है—

(1) जनसंख्या का बड़ा आकार
(2) जनसंख्या की विजातीयता तथा
(3) जनसंख्या का अधिक महत्त्व

इन तीनों लक्षणों के परिणामस्वरूप ही औद्योगिक समाज में अनेक अन्य लक्षण उत्पन्न हुए।

### (4) औद्योगिकोत्तर समाज (Post-Industrial Society)

औद्योगिक समाज की अवधारणा का विश्लेषण ब्रिटिश समाज विज्ञानी **डेनियल बेल** ने अपनी पुस्तक *'The Coming of Post-Industrial Society'* (1973) में प्रस्तुत किया। वैसे यह अवधारणा उन्होंने 'तकनीकी और सामाजिक परिवर्तन' पर हुए एक सेमिनार में 1962 में ही प्रस्तुत की थी। इस अवधारणा को विकसित करके उन्होंने 21वीं शताब्दी के समाज के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करने का प्रयास किया।

**डेनियल बेल** के अनुसार किसी भी समाज के तीन भाग होते हैं—

(1) सामाजिक परिवर्तन
(2) राजनीति
(3) संस्कृति

औद्योगिकोत्तर समाज की अवधारणा मूलतः सामाजिक संरचना में परिवर्तन से सम्बन्धित है। सामाजिक संरचना के विभिन्न पहलू; जैसे—अर्थव्यवस्था, तकनीकी एवं व्यावसायिक व्यवस्था में जो परिवर्तन आता है, उनका विश्लेषण ही औद्योगिकोत्तर समाज की अवधारणा का मुख्य चिन्तन बिन्दु है।

Scanned with CamScanner